# धनी न जाए किनको धूत्यो

धनी न जाए किनको धूत्यो, जो कीजे अनेक धुतार।
तुम चैन ऊपर के कई करो, पर छूटे न क्यों ए विकार।।

कोई बढ़ाओ कोई मुड़ाओ, कोई खैंच काढ़ो केस।
जोलों आतम न ओलखी, कहा होए धरे बहु भेस।।

सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर।
जोलों प्रेम न उपजे पिउ सों, तोलों मन न छोड़े फेर।।

सतगुर सोई जो आप चिन्हावे, माया धनी और घर।
सब चीन्ह परे आखिर की, ज्यों भूलिए नहीं अवसर।।

ए पेहेचाने सुख उपजे, सनमंध धनी अंकूर।
महामत सो गुर कीजिए, जो यों बरसावे नूर।।